भारत के प्रधानमंत्री का श्रीलंका दौरा

*डॉ. एम. समता**

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की श्रीलंका यात्रा अनेक कारणों से महत्वपूर्ण है। दो दशकों से भी अधिक अवधि में यह पहली बार है कि किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने श्रीलंका का दौरा किया और (अब) श्री मोदी जातीय संघर्ष के कारण लगभग तीस वर्ष से तबाह श्रीलंका के उत्तर-पूर्व क्षेत्र का दौरा करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। यह दौरा जनवरी के राष्ट्रपति चुनावों के बाद श्रीलंका में मैत्रीपाला सिरीसेना के नए राष्ट्रपति बनने के बाद इस द्वीप में नई राजनीतिक व्यवस्था को देखते हुए महत्वपूर्ण है। भारत के साथ संबंधों को बेहतर बनाने में नई सरकार की दिलचस्पी तब स्पष्ट हो गई, जब श्रीलंका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति ने अपनी पहली विदेश यात्रा के गंतव्य के रुप में भारत को चुना।

वर्ष 1983 में जातीय/सांप्रदायिक संघर्ष की शुरुआत के बाद से भारत और श्रीलंका के संबंध काफी हद तक आंतरिक राजनीति पर आधारित जटिल रास्तों से होकर गुजरे हैं। दोनों देश इस बात को समझते हैं और सतत विकास सहायता के माध्यम से तथा मुक्त व्यापार समझौते और त्रिपक्षीय समुद्री सुरक्षा करार पर हस्ताक्षर करके द्विपक्षीय संबंधों को सुधारने के प्रयास किए गए। इसके परिणामस्वरूप, अशांत आंतरिक राजनीति के बावजूद दोनों देशों के बीच निरंतर संपर्क कायम रहे। वर्ष 2009 में लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (एलटीटीई) की सैन्य पराजय और देश में सभी राजनीतिक दलों को स्वीकार्य एक सुलह प्रक्रिया शुरू करने में श्रीलंका सरकार की विफलता पूर्व राष्ट्रपति राजपक्षे की पराजय का कारण बना। कई लोगों का तर्क है कि पिछले शासन का झुकाव क्षेत्र-बाह्य ताकतों की ओर हो गया था, जिससे भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के कारण सतर्क होना पड़ा। इस संदर्भ में, इस दौरे ने एक महत्वपूर्ण पड़ोसी के साथ संबंध सुदृढ़ करने में सहायता की है।

इस यात्रा के दौरान भारत और श्रीलंका ने चार समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। इनमें युवाओं के आदान-प्रदान और शिक्षा, विश्वविद्यालय सभागार का निर्माण, आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीज़ा से छूट और सीमा शुल्क सहयोग शामिल हैं। इन समझौता ज्ञापनों के अलावा, प्रधानमंत्री ने श्रीलंकाई रेल का उन्नयन करने के लिए 3 अरब 18 करोड़ रूपए की ऋण श्रृंखला (एलओसी) की घोषणा की; ट्रिंकोमाली को एक पेट्रोलियम केन्द्र के रूप में विकसित करने और 500 मेगावाट समपुर विद्युत परियोजना को पूरा करने के साथ ही साथ श्रीलंकाइयों के लिए ई-वीजा सेवाएं आरंभ करने का वायदा किया। भारत अतीत में विकास सहायता के लिए 1.6 अरब अमरीकी डॉलर (देने) का वायदा कर चुका है। श्रीलंका की संसद को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने महत्वाकांक्षी व्यापक आर्थिक भागीदारी करार संपन्न करने की चर्चा की, जो लंबे समय से विचाराधीन था। इस यात्रा के दौरान शामिल मुद्दों से अनेक स्तरों पर वार्ता करने की भारत और श्रीलंका की सरकार की इच्छा प्रदर्शित हुई। उदाहरण के लिए, फरवरी में श्रीलंकाई राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान दो करारों और दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए थे। इनमें वर्ष 2015-18 के लिए सांस्कृतिक और कृषि सहयोग, रक्षा तथा रणनीतिक सहयोग का विस्तार और असैनिक परमाणु सहयोग करार, जिसपर दोनों देशों के बीच पहली बार हस्ताक्षर किए गए थे, शामिल हैं।

इस दौरे का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू था, युद्ध से क्षतिग्रस्त श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी भागों के पुनर्निर्माण के लिए भारत द्वारा दिखाई गई प्रतिबद्धता। जाफना की अपनी यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री ने बेघर तमिलों को 27,000 से अधिक नए मकान सौंपे और उत्तरी-पश्चिमी शहर तलईमन्नार में रेल सेवा का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री मोदी ने तमिल नेशनल एलायंस (टीएनए) के नेताओं से मुलाकात की और उनसे नई सरकार को सभी के लिए स्वीकार्य किसी राजनीतिक समाधान पर पहुंचने हेतु कुछ समय देने के लिए कहा। उन्होंने इशारा किया कि, "तमिल नेशनल एलायंस (टीएनए) को नई सरकार के साथ वार्ता के लिए किसी भिन्न रणनीति के साथ आगे आना चाहिए।"

जाफना दौरा इस तथ्य की ओर एक संकेत था कि भारत सरकार श्रीलंका की मौजूदा शासन से उम्मीद करेगी कि वह सुलह के सवाल को एक शांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीके से हल करे। एक सौहार्दपूर्ण हल निकालने के लिए '13वें संशोधन के शीघ्र तथा पूर्ण कार्यान्वयन और उससे आगे बढ़ने'' के भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए सुझाव पर मिश्रित प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। भारतीय प्रधानमंत्री ने "सहकारी संघवाद" पर बल दिया। जहां श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने इस विचार पर समर्थन व्यक्त किया, वहीं कट्टर सिंहली दलों, जैसे जनता विमुक्ति पेरामुना(जेवीपी) और जातिका हेला

उरुमाया (जेएचयु) का विचार था कि यह संशोधन भारत द्वारा थोपा गया है और यह जातीय समस्या का समाधान नहीं सुझाता। इस सुझाव का तमिल नेतृत्व द्वारा स्वागत किया गया क्योंकि वर्तमान परिदृश्य में, तमिल दल समझते हैं कि एक एकीकृत श्रीलंका के भीतर ही कोई समाधान ढूंढना होगा। यह विचार उत्तरी प्रांत के मुख्यमंत्री श्री विग्नेस्वरन द्वारा दिए गए एक वक्तव्य में परिलक्षित हुआ। उन्होंने कहा कि "13वें संशोधन के स्थान पर सत्ता के विकेन्द्रीकरण हेतु एक अधिक गतिशील प्रणाली लाने की जरूरत है, क्योंकि यह संशोधन कोई अंतिम समाधान नहीं हो सकता"।

एक अन्य मुद्दा, जिसपर चर्चा की गयी, वह था - मछुआरों का मुद्दा। श्रीलंकाई जल-सीमा में घुसपैठ करने पर मछुआरों को गोली मार देने के श्रीलंका सरकार के अधिकार के बारे में श्रीलंकाई प्रधानमंत्री की हाल की टिप्पणी ने स्थिति की गंभीरता को दर्शाया। चूंकि यह दोनों पक्षों के मछुआरों की आजीविका का मुद्दा है, इसलिए दोनों सरकारों ने इसे मानवीय आधार पर हल करने का निर्णय लिया। व्यावहारिक व्यवस्था तलाशने के लिए बातचीत में मछुआरा संगठनों को भी शामिल करने का सुझाव प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिया गया। इस सुझाव पर अनुवर्ती कार्रवाई किए जाने की आवश्यकता है।

श्रीलंका में चीन की भूमिका के प्रश्न पर, भले ही भारत के प्रधानमंत्री अपनी यात्रा के दौरान इस द्वीप राष्ट्र में चीन की भूमिका के संदर्भ में कोई प्रत्यक्ष चर्चा करने से बचते रहे, पर भारत अपेक्षा करता है कि श्रीलंका की नई सरकार चीन से कारोबार/व्यवहार करते समय इसकी (भारत की) चिन्ताओं को ध्यान में रखेगी। अतीत में, भारत ने कोलंबो बंदरगाह पर दो चीनी पनडुब्बियां की उपस्थिति पर अपनी चिन्ता व्यक्त की थी। लेकिन तथ्य यह है कि चीन की भूमिका श्रीलंका में मजबूती से स्थापित है। चीन अब श्रीलंका में सबसे बड़ा निवेशक और इसका दूसरा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। वर्ष 2005-2012 के दौरान, चीन ने श्रीलंका को 4.8 अरब अमरीकी डॉलर सहायता (राशि) के रूप में प्रदान किया। इसमें से, केवल दो प्रतिशत एकमुश्त अनुदान दिया गया है और शेष 98 प्रतिशत उदार ऋण के रूप में है। इसने श्रीलंका के साथ सैन्य संबंध भी बढ़ाए हैं जो भारत के लिए चिंता का विषय है। उदाहरण के लिए, चीनी सैन्य आपूर्ति प्रति वर्ष 1 अरब डॉलर होने का अनुमान है। इसलिए, सिरीसेना के कार्यकाल में चीन-श्रीलंका संबंध हिन्द महासागर में चीन की स्थिति के लिए महत्वपूर्ण रहेगा।

श्रीलंका की संसद को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने क्षेत्रीय विकास और महासागर अर्थव्यवस्था के विकास के लिए सहयोग की आवश्यकता का उल्लेख किया। हिंद महासागर क्षेत्र में क्षेत्र-बाह्य ताकतों की मौजूदगी के बारे में भारत कि चिंता पर चर्चा हुई जब उन्होंने कहा कि श्रीलंका का "नेतृत्व और इसकी भागीदारी एक शांतिपूर्ण, सुरक्षित, स्थिर और समृद्ध समुद्री पड़ोस के निर्माण के लिए

महत्वपूर्ण होगी"। भारत समझता है कि हिंद महासागर में स्थित देशों की मदद के बिना नीली (समुद्री) अर्थव्यवस्था विकसित करने का 18वें सार्क शिखर सम्मेलन का लक्ष्य संभव नहीं होगा।

बहरहाल, भारत और श्रीलंका के बीच संबंध इस बात पर भी निर्भर करेंगे कि भारत सरकार श्रीलंका की नई सरकार की आशाओं को किस प्रकार पूरा करती है। उदाहरण के लिए, श्रीलंका को युद्ध अपराधों की जांच के संबंध में अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में भारत से निरंतर समर्थन की उम्मीद है और पूर्व राष्ट्रपति के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों से निपटने में भी भारत से समर्थन की उम्मीद है।

कुल मिलाकर, इस यात्रा का उपयोग दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और जातीय संबंधों को दोहराने और क्षेत्रीय शांति तथा समृद्धि के लिए विभिन्न स्तरों पर सहयोग की आवश्यकता को पुख्ता करने के लिए किया गया।

***

*डॉ. एम. समता विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।